फरवरी २०१३

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

टालो बोरियत

टालो बोरियत

अक्रम एक्सप्रेस

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते हैं... १
यह तो नई ही बात है! २
फर्ज ४
बस स्टॉप ७
अपने आपको परीक्षण करके देखो! १०
मीठी यादें ११
ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ १२
चलो खेलें... १४
पूज्यश्री के साथ बच्चे १६
चुटकुलें २०

संपादकीय

बालमित्रो,

आपको कभी बोरियत होती है? क्या बात करते हो, बार-बार होती है? तब तो जब भी बोरियत होती होगी, तब क्या-क्या होता होगा, उसका पूरा अनुभव होगा ही। फिर भी यदि कोई हमें पूछे कि, बोरियत मतलब क्या? तो हम सिर्फ इतना ही कह सकते हैं कि बोरियत मतलब बोरियत। कुछ भी अच्छा नहीं लगे और कहीं भी अच्छा नहीं लगे, उसका नाम बोरियत।

परम पूज्य दादाश्री ने इस अंक में बोरियत की बहुत सुंदर और कभी-भी न सुनी हो, अरे! सोची भी नहीं हो ऐसी विशेष परिभाषा दी है। साथ ही साथ बोरियत किस समझ से दूर हो सकती है, उसकी बातें भी कीं हैं।

इसलिए जिसे बार-बार बोरियत होती हो उसके लिए तो यह अंक खास तौर से पढ़ने लायक है।

- डिम्पल मेहता

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : १०
अखंड क्रमांक : १०
फरवरी २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९

राजकोट त्रिमंदिर : ९२४१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by :
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.
Published at Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

"बोरियत", गुजराती में बोरियत को "कंटाला" कहा जाता है। इस शब्द का पृथक्करण किया है कि कंटाला नाम किस तरह से पड़ा होगा? कांटे बिखरे पड़े हों और उसके ऊपर बिस्तर बिछाया हो तब कैसी शांति रहती है? फिर बोरियत होती है। कांटे का बिस्तर, उसीका नाम कंटाला।

टालो, बोरियत!

दादाश्री : क्या कभी बोरियत-वोरियत होती है?

प्रश्नकर्ता : बोरियत होती है न! जो वस्तु अप्रिय हो, उसमें बोरियत होती है।

दादाश्री : वह तो अरुचि उत्पन्न होता है। इस जगत् में कोई वस्तु प्रिय बनाने जैसी नहीं है, वैसे ही अप्रिय बनाने जैसी भी नहीं है। अगर रात के बाद दिन नहीं हो तो तुम्हें बोरियत होगी या नहीं होगी? अगर हमेशा दिन ही रहे तो तुम क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : तो भी बोरियत होगी।

दादाश्री : वैसे ही इस जीवन में कभी पसंदीदा आता है तो कभी नापसंद का भी आता है। ये दोनों नहीं हों तो तो बोरियत होगी। इसलिए यह सब इन्टरेस्ट रहे इसलिए हैं। अब लोग इसमें दुःख मान बैठे हैं, तो क्या किया जाए?

रोज़ शादी का खाना मिले तो तुम बोर हो जाओगे या नहीं? फिर क्या चाहिए? मन में ऐसा होगा कि चलो, खिचड़ी खाएँ। रोज़ ऐसा अच्छा नहीं लगता। ऐसा होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है, बोरियत होती है।

दादाश्री : तब उसका उपाय करना पड़ता है, लेकिन लोग क्या उपाय करते हैं कि टी.वी. देखते रहते हैं, भाग दौड़ करते हैं। बोरियत होती है लेकिन सहनशक्ति है नहीं, इसलिए इस तरह भाग दौड़ करते हैं, उससे थोड़ी देर मज़ा आता है लेकिन फिर वापस बोरियत शुरू।

प्रश्नकर्ता : तो क्या उपाय करना चाहिए?

दादाश्री : तब सोचना चाहिए कि खुद से क्या गलती हो रही है?

प्रश्नकर्ता : बोरियती होती हो तो इसमें खुद की क्या गलती है?

दादाश्री : अंदर सब उल्टा माल भरा हैं वही तुम्हें सब उल्टा दिखाता है। जब सीधा होता है न उसे भी उल्टा दिखाता है। (कुदरत सब सीधे के लिए करती है उसे भी उल्टा दिखाता है)। तब हम क्या समझें?

प्रश्नकर्ता : अपना उल्टापन।

दादाश्री : हाँ, यही गलती।

यह तो नई ही बात है!

जहाँ आनंद है वहाँ थकान नहीं होती, बोरियत नहीं होती।

जिस सुख की मात्रा बढ़ जाए, फिर उसी में बोरियत होती है और उसमें दु:ख लगता है। एक साथ कितनी आइस्क्रीम खा सकते हैं? फिर तो ऐसा लगता है कि बस, अब नहीं।

जिसने जिसमें सुख माना उसमें उसे सुख दिखाई देता है। बाकी सब में बोरियत होती है। किसी को बाल लंबें नहीं होते, इससे बोरियत होती है और किसीको जल्दी बाल लंबे हो जाते हैं और कटवाने जाना पड़ता है उसकी बोरियत होती है।

किसी का इंतज़ार करने में बहुत बोरियत होती है। तब हमें त्रिमंत्र, प्रार्थना या विधि बोलना शुरू कर दें तो बोरियत गायब!

खुद की गलतियों पर कंटाला आने लगा तो समझना कि गलतियाँ अब चली जाएगी। उदा. कंटाला आए कि कब तक मैं सभी को दुःख देता रहूँगा? ऐसा हो उसके बाद दुःख देना कम होता जाएगा।

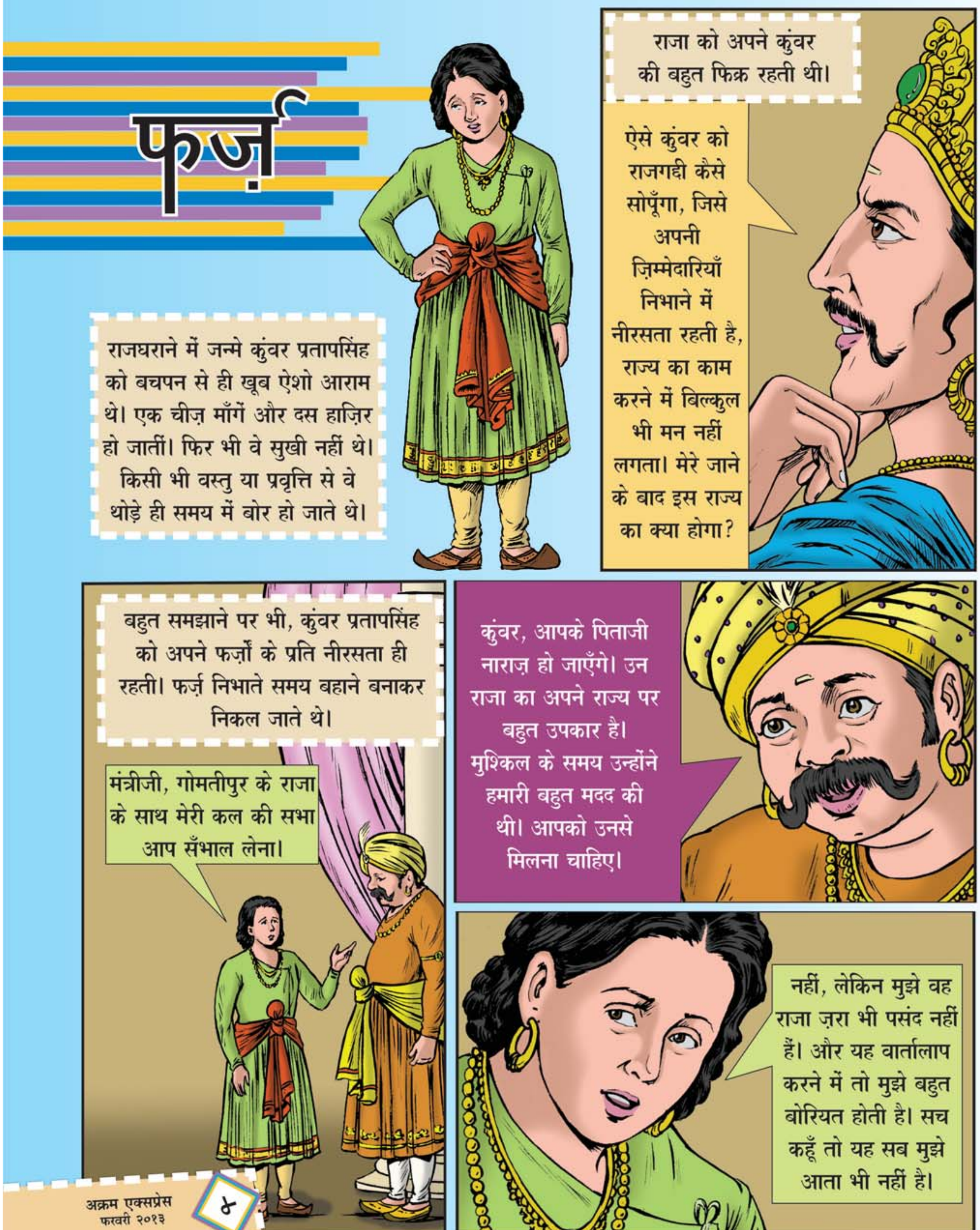
फर्ज़
राजघराने में जन्मे कुंवर प्रतापसिंह को बचपन से ही खूब ऐशो आराम थे। एक चीज़ माँगें और दस हाज़िर हो जातीं। फिर भी वे सुखी नहीं थे। किसी भी वस्तु या प्रवृत्ति से वे थोड़े ही समय में बोर हो जाते थे।
राजा को अपने कुंवर की बहुत फिक्र रहती थी।
ऐसे कुंवर को राजगद्दी कैसे सोपूँगा, जिसे अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभाने में नीरसता रहती है, राज्य का काम करने में बिल्कुल भी मन नहीं लगता। मेरे जाने के बाद इस राज्य का क्या होगा?
बहुत समझाने पर भी, कुंवर प्रतापसिंह को अपने फर्ज़ों के प्रति नीरसता ही रहती। फर्ज़ निभाते समय बहाने बनाकर निकल जाते थे।
मंत्रीजी, गोमतीपुर के राजा के साथ मेरी कल की सभा आप सँभाल लेना।
कुंवर, आपके पिताजी नाराज़ हो जाएँगे। उन राजा का अपने राज्य पर बहुत उपकार है। मुश्किल के समय उन्होंने हमारी बहुत मदद की थी। आपको उनसे मिलना चाहिए।
नहीं, लेकिन मुझे वह राजा ज़रा भी पसंद नहीं हैं। और यह वार्तालाप करने में तो मुझे बहुत बोरियत होती है। सच कहूँ तो यह सब मुझे आता भी नहीं है।

कुंवर और मंत्री के बीच में प्रेम का संबंध था। मंत्रीजी ने बचपन से ही कुंवर की देखभाल की थी।
कुंवर, बातचीत किए बिना हम उनके राज्य में से माल-सामान का आयात कैसे कर पाएँगे? आप, यदि अपने इस अनिवार्य काम को "प्रिय" बना दें, तो फिर काम करने की शक्ति भी आपको ज़रूर मिल जाएगी। बस, आप इस काम में रूचि लें, आपको ज़रूर यह काम अच्छा लगने लगेगा।
लेकिन, मुझे यह सब काम अच्छे नहीं लगते। ऐसा फर्ज़ मुझे कबूल नहीं हैं। राज्य की देखरेख तो पिताजी कर ही रहे हैं, और मदद के लिए आप साथ में हो ही।
मंत्रीजी, आज दोपहर को आप वेश बदलकर, राज्य में प्रजा सुख-शांति में है या नहीं उसकी खबर लेने जाना। साथ में कुंवर को भी ले जाना।
जैसी आपकी आज्ञा, महाराज।
मंत्रीजी ने सेठ का वेश पहना और कुंवर ने सेठ के बेटे का वेश पहना। महल में से बाहर निकलते ही उन्होंने कुछ मज़दूरों और कारीगरों को देखा।
ज़ोर लगा के ......हाइशा....
भैया, कामकाज कैसा चल रहा है?
राजा की मेहरबानी से सब अच्छा चल रहा है।
इतना कठिन काम कर रहे हैं, फिर भी इनके चेहरे पर बिल्कुल भी बोरियत नहीं है? कैसे आनंद में दिख रहे हैं, सभी! यह कैसे संभव है?

थोड़ा आगे जाने पर,
पूड़ी तलने में कैसा मज़ा, भई कैसा मज़ा!
धंधा-पानी सब कैसा चल रहा है, भैया?
राजा की कृपा से सब कुशल मंगल है।
यह आदमी पसीने से लथपथ है, फिर भी ऐसे मुश्किल काम में मज़ा मानता है! ऐसा कैसे हो सकता है?
भैया, इतनी गर्मी में तुम्हें इस गरम तेल के पास काम करना अच्छा लगता है? बोर नहीं हो जाते?
अरे, इसमें बोरियत कैसी? यह तो मेरी रोज़ी रोटी है। फर्ज़ है। ऐसे भी, राज़ी-खुशी से करूँ या चिढ़कर करूँ, लेकिन किए बिना चारा ही नहीं, करना ही है। तो फिर खुशी से क्यों न करूँ?
कैसी समझदार है यह प्रजा! कैसी राज़ी-खुशी से इतनी कठिनाईयों में भी अपने सभी फर्ज़ निभाते हैं। पिताजी भी अपनी फर्ज़ कितने सुंदर ढंग से निभा रहे हैं, जिसके कारण उनकी प्रजा उनसे इतनी संतुष्ट हैं। मेरे पास तो सभी सुख और सुविधाएँ हैं। किसी भी काम में मेरा चित्त नहीं लगता इसलिए बोरियत होती है और दुःखी रहता हूँ। यदि मैं भी अपना काम मन लगाकर करूँगा तो कितने आनंद में रह सकूँगा!
महल लौटते वक्त,
"मंत्रीजी, गोमतीपुर के राजा के साथ की सभा कितने बज़े हैं?"
मंत्रीजी धीरे से मुस्कुराए।

बस स्टॉप

चार बजकर तेंतीस मिनट पर तन्वी की स्कूल बस संयमपुर के बस-स्टॉप पर आकर खड़ी रहती। इस बस-स्टॉप पर उसे बस बदलनी पड़ती थी। घर ले जानेवाली बस करीब पाँच बजने में दस मिनट पर आती थी। मतलब रोज़ सत्रह मिनट तन्वी और दूसरे बच्चे, उस बस-स्टॉप पर गुज़ारते।

उस बस-स्टॉप पर सत्रह मिनट गुज़ारना इन बच्चों के लिए एक बड़ी सज़ा थी। वह जगह अत्यंत अप्रिय और दयनीय स्थिति में थी। वातावरण में ट्राफिक का शोर और वाहनों में से निकलनेवाले दुर्गंध युक्त धुँए से बच्चे परेशान हो जाते। इतना ही नहीं साथ में जगह की गंदगी बढ़ाने के

लिए, वहाँ एक कौने में लोगों ने कचरा भी डाला था। कोल्ड-ड्रिंक्स के केन और फूड-रेपर्स का वहाँ ढेर था। दीवारों पर भी विचित्र लिखावट और चित्र बनाए हुए थे। ऐसी जगह पर सत्रह मिनट गुज़ारना वह तो एक सज़ा ही लगे न!

लेकिन तन्वी के पास दूसरा कोई विकल्प नहीं था। बस का टाइम-टेबल तो वह चेन्ज नहीं कर सकती थी! और घर जाने के लिए दूसरा कोई तरीका भी नहीं था। इसलिए, अंत में बोर होने पर भी सत्रह मिनट उस बस-स्टॉप पर निकालने ही पड़ते थे।

एक दिन बस-स्टॉप पर बैठे-बैठे तन्वी को विचार आया, "मेरी ज़िंदगी का इतना कीमती समय मैं रोज़ इस बस-स्टॉप पर बेकार ही जाने दे रही हूँ। रोज़ का समय बोरियत में बिगाड़ने की जगह, मैं इस समय का सद्उपयोग करूँ तो कितना अच्छा। इस समय का ऐसा सद्उपयोग करूँ ताकि ये सत्रह मिनट सिर्फ मेरे अकेले के लिए ही नहीं लेकिन सभी के लिए आनंददायक बन जाएँ।" इस तरह तन्वी को बोरियत में से बाहर निकलने का एक उपाय सूझा।

घर जाकर तन्वी ने थोड़ी प्लास्टिक बेग्स, स्कूल बेग में पैक किए और मम्मी से हाथ के मोजे माँगे। दूसरे दिन से, रोज़ सत्रह मिनट के लिए तन्वी हाथ में मोजा पहनकर, बस-स्टॉप पर फेंका हुआ कचरा प्लास्टिक बेग में भरने लगी।

यह देखकर उसकी स्कूल के दूसरे विद्यार्थी उसे चिढ़ाने लगे, "यह क्या कर रही है तन्वी, तू पागल हो गई है क्या? कचरा पड़ा रहेगा तो उससे तुझे क्या फर्क पड़ता है? इसमें तेरा टाइम क्यों वेस्ट कर रही है?"

लेकिन तन्वी ने सभी की बात सुनी-अनसुनी कर दी, उसे मालूम था कि वह टाइम वेस्ट नहीं, लेकिन इन्वेस्ट कर रही है! एक हफ्ते में तो पूरा कौना काफी कुछ साफ हो गया।

उसके बाद तन्वी ने अपनी मम्मी से पौधे उगाने की जानकारी ली। दूसरे दिन से उसने उस कौने में लगे हुए पौधों के आसपास उगी हुई घास निकालना शुरू किया।

"मुझे गार्डनिंग बहुत अच्छी लगती है। मैं तेरी हेल्प करूँ?" धारा ने तन्वी से पूछा। और इस तरह, धारा भी

तन्वी के साथ जुड़ गई। धारा भी समझ गई कि रोज़ बस-स्टॉप पर बोर होने के बजाय कुछ रचनात्मक काम करना चाहिए। कौना तो अब बहुत सुंदर लग रहा था। लेकिन दीवार पर वह चित्र और लिखावट तन्वी को परेशान कर रहे थे। "क्या करूँ इन चित्रों का, डैडी?" तन्वी ने पूछा।

"क्या करना है तुझे?" डैडी ने पूछा। अपने प्रश्नों का जबाव नहीं मिलने पर वह खुद ही सोचने लगी। आखिर में उसे एक तरकीब मिल ही गई। उसने डैडी से कहकर बिल्डिंग के मालिक से दीवार पेंट करवाने की पर्मीशन ली।

पर्मीशन मिलते ही उसने खुद के बचे हुए पैसों में से स्प्रे-पेंट खरीदा। अब तो दूसरे बच्चे भी तन्वी के इस प्रोजेक्ट में जुड़ गए। सब ने मिलकर दीवार पर सुंदर पेंट किया। और इस तरह, दयनीय स्थितिवाला वह कौना अब सुंदर हो गया! फिर से उस कौने में गंदगी नहीं हो उसके लिए बच्चे सावधान रहने लगे। सफाई बनाए रखने के लिए उन्होंने अंदर ही अंदर अलग-अलग ज़िम्मेदारियाँ बाँट ली। उस कौने में बच्चों ने गुलाब के पौधे भी उगाए और बहुत सावधानी से उन पौधों की देखभाल करने लगे।

प्रिन्सिपल साहब को यह जानकारी मिलते ही उन्होंने सभी बच्चों का ऐसा लोकोपयोगी काम करने के लिए अभिनंदन किया और तन्वी के सिर पर हाथ रखकर कहा, "इस प्रोजेक्ट का मुख्य श्रेय तन्वी को जाता है। बोर होकर टाइम पास करना आसान है। गंदगी के लिए सरकार को गाली देना भी आसान है, लेकिन तन्वी ने ऐसा कुछ नहीं किया। उसने तो कुछ ऐसा कर दिखाया, जिसके कारण आज छोटे-बड़े सभी उस बस-स्टॉप पर सुखद पलों का आनंद उठा रहे हैं।"

इस तरह तालियों के साथ सभी ने तन्वी को बधाई दी।

"इस प्रोजेक्ट का मुख्य श्रेय तन्वी को जाता है।"

अपने आप को परखकर देखो

नताशा, अभी और त्रिशा को कुछ काम प्रिय हैं और कुछ काम में बोरियत होती है। जो कार्य करने में उन्हें बोरियत होती है, उसका उपाय भी उन्होंने खोज़ लिया है।
नीचे दिए हुए ६ क्लू में से खोज़ निकालो कि नताशा, अभी और त्रिशा को क्या करना अच्छा लगता है, क्या करने से बोर हो जाते हैं और बोरियत को टालने के लिए वे किस उपाय का उपयोग करते हैं?

प्रिय कार्य - टी.वी. देखना, इन्टरनेट सर्फिंग करना और घूमने जाना।

बोरियत भरे कार्य - पढ़ना, घर के काम में मदद करना और सुबह जल्दी उठना।

बोरियत टालने का उपाय

१. "मुझे अच्छा लगता है", "मुझे अच्छा लगता है" ऐसा समझकर काम करना।

२. उसमें एकाग्रता बढ़े तो आनंद आए और बोरियत चली जाए। एकाग्रता बढ़ाने के लिए दस मिनट आँखे बंद करके, "दादा भगवान के असीम जय जयकार हो" बोलना।

३. उस काम को करने के फायदे जानकर, उस काम को प्रिय बनाकर और काम करने की शक्ति प्राप्त करनी।

क्लूज़

१. नताशा, अभी और त्रिशा का प्रिय और बोरियतवाला काम एक दूसरे से अलग हैं।

२. अभी के उपाय ३, का उपयोग करने की ज़रूरत नहीं है।

३. जिसने उपाय २, का उपयोग किया, उसे जल्दी उठने में कोई बोरियत नहीं होती।

४. त्रिशा ने उपाय १ का उपयोग किया और उसे सुबह जल्दी उठने में या पढ़ने में कोई बोरियत नहीं होती।

५. नताशा को घूमना बहुत अच्छा लगता है।

६. जिसे इन्टरनेट सर्फ करना अच्छा लगता था उसे घर का काम करने में बोरियत होती थी।

नीचे के चार्ट में अधूरी जानकारी ढूँढकर भरो।

	प्रिय कार्य	बोरियतवाला कार्य	बोरियत टालने के उपाय
नताशा			
अभी			
त्रीशा			

मीठी यादें

अडालज मंदिर नहीं बना था उससे पहले की घटना है। एक दिन दो ब्रह्मचर्य का ध्येयवाली बहनों ने तय किया कि हर महीने खुद की तनख्वाह में से कुछ भाग दादा के कार्य में देंगे। पहले महीने सेन्टर में जाकर डोनेशन दे आईं। जब दूसरे महीने वापस गईं तब वहाँ की कार्यकर्ता महात्मा बहन ने उनसे पूछा, "आप क्यों हर महीने डोनेशन देती हो?" दोनों बहनों ने अपनी भावना बताई। कार्यकर्ता महात्मा बहन को इन दोनों बहनों के बारे में सब जानकारी होने के कारण उन्होंने दूसरी बार के पैसे अपने पास रखे और थोड़े दिन बाद जब नीरू माँ सत्संग के लिए वहाँ आईं, तब उनके हाथ में पैसे देकर उन बहनों की भावना की बात की।

नीरू माँ ने पैसे हाथ में लिए और आँखों से लगाकर फिर कहा, "यह उन दोनों बहनों को वापस देना और उनसे कहना कि उन लोगों को पूरी ज़िदगी कमाना नहीं है। फटाफट पैसे इकट्ठे करके अडालज आना है और दादा का बहुत काम करना है। ये पैसे उन लोगों को वापस दे देना।"

नीरू माँ का संदेशा सुनकर उन बहनों में जैसे नया जोश भर गया। अडालज आ जाने के लिए वे सब तरह से तैयारियाँ करने लगी। कुछ समय बाद वे अडालज भी आ गईं।

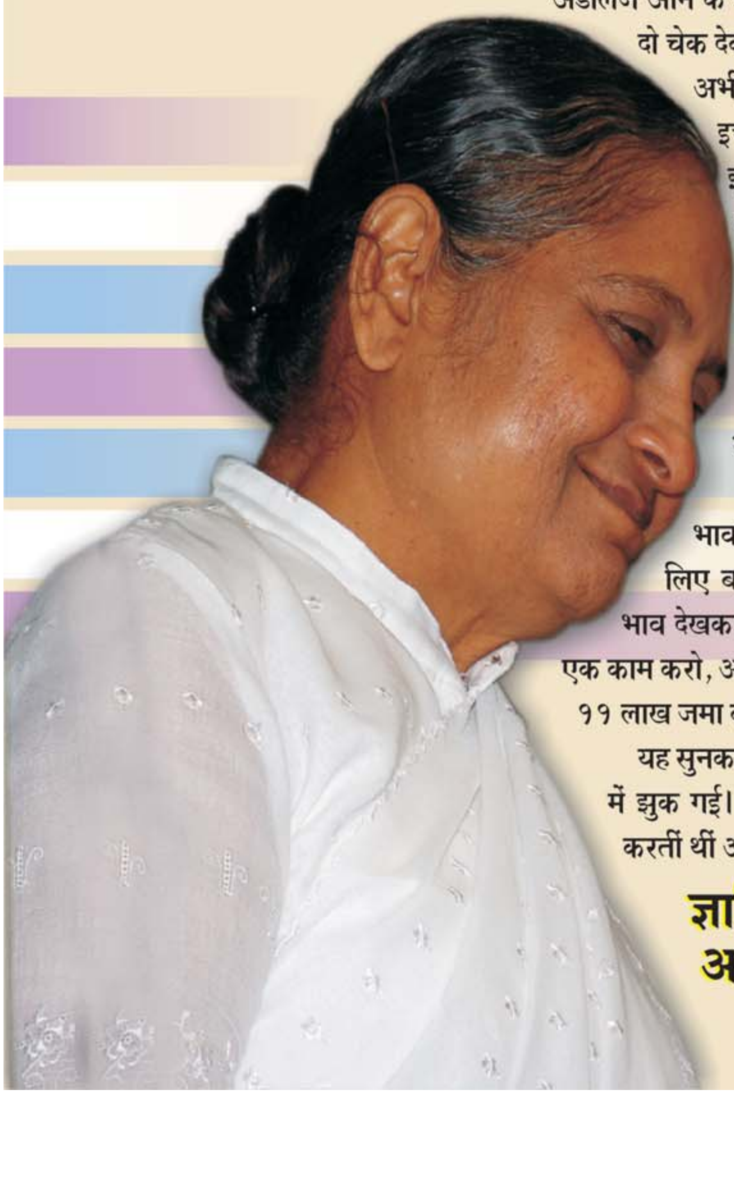

अडालज आने के बाद एक दिन उन्होंने नीरू माँ को पचास हज़ार के दो चेक देकर कहा, "नीरू माँ, हमारी बचत में से थोड़ा हिस्सा अभी आया है। दूसरा इन्वेस्टमेन्ट करने से पहले हमारी इच्छा है कि भगवान के लिए दें। एक बार यदि इन्वेस्ट हो जाएँगे। तो फिर हमारे हाथ में जल्दी पैसा नहीं आएगा।"

नीरू माँ को उन बहनों की आर्थिक स्थिति की जानकारी होने के कारण उन्होंने खूब प्रेम से कहा, "बेटियों के पैसे कहीं लिए जाते होंगे? यह सब इन्वेस्ट कर दो।" ऐसा कहकर उन्होंने चेक वापस कर दिए।

दोनों बहनों को भगवान के लिए देने का बहुत भाव था। इसलिए वे नीरू माँ से चेक स्वीकार करने के लिए बार-बार आग्रहभरी विनती करने लगीं। दोनों का भाव देखकर नीरू माँ बोली, "इतने ज्यादा तो नहीं ले सकते। एक काम करो, आप मुझे ११ हज़ार दो। हम भगवान के पास तुम्हारे ११ लाख जमा करवा देंगे।"

यह सुनकर दोनों बहनें गद्गद हो गई और नीरू माँ के चरणों में झुक गईं। वे सामनेवाले के भाव को जानकर उसे पूरा भी करतीं थीं और उसे कोई तकलीफ भी नहीं होने देतीं थीं, यह

ज्ञानियों की कैसी अद्भुत करुणा!

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

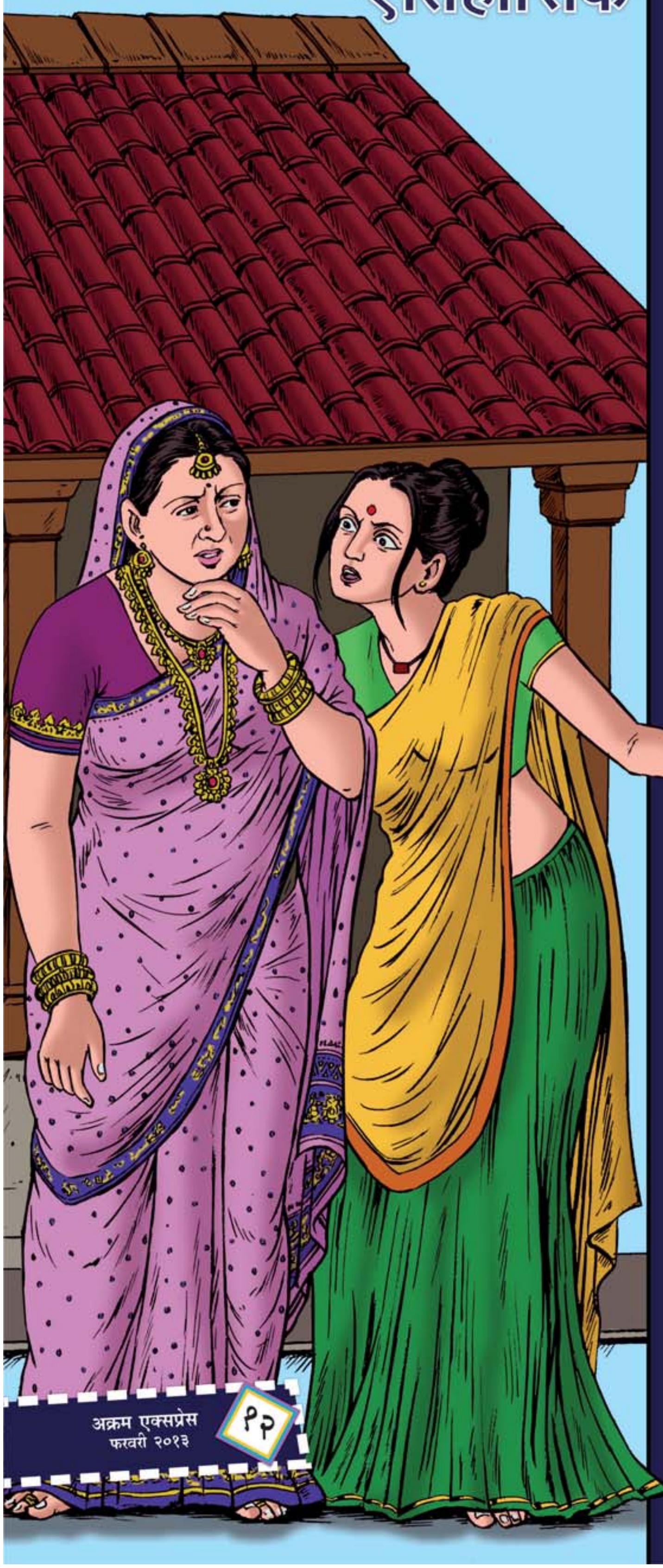

पिछले अंक में हमने देखा कि चंपानगरी पर चढ़ाई होते ही राजा दधिवाहन भाग गए थे। रानी धारिणी और राजकुमारी वसुमती को रथ में बिठाकर एक सैनिक जंगल की ओर भाग गया। रास्ते में सैनिक की रानी के प्रति दृष्टि बिगड़ी। रानी ने अंगूठी में से हीरे को चूसकर मृत्यु को अपनाया। सैनिक घबरा गया। राजकुमारी भी माता जैसा कदम उठा लेगी तो कुछ भी हाथ में नहीं आएगा ऐसा सोचकर उसने राजकुमारी को कौशाम्बी नगरी के भरे बाज़ार में बेचने के लिए खड़ा किया। एक संस्कारी सेठ धनावह ने राजकुमारी को दुराचारी व्यक्तियों से बचाने के लिए खरीद लिया। अब आगे....

धनावह सेठ वसुमती को अपने घर ले गए। उनकी पत्नी मूला सेठानी को सब हकीकत बताई और वसुमती को उन्हें सौंपते हुए कहा, "सेठानी, इस बच्ची को पुत्री की तरह स्नेह देना। वैसे भी हमारी कोई संतान नहीं है। ईश्वर ने हमारी यह इच्छा भी पूरी कर दी।"

वसुमती ने सेठ और सेठानी के पैर छुए और उसे आसरा देने के लिए उनका खूब-खूब आभार माना। दिन बीतने लगे। धीरे-धीरे वसुमती ने घर का सब काम सँभाल लिया। उसके सद्गुणों की सुगंध अड़ोस-पड़ोस में भी फैल गई। उसने सबका प्रेम जीत लिया। सेठ का भी पुत्री वसुमती पर स्नेह बढ़ता गया। सेठ के घर एक कामवाली बहन थी। वह सेठ के घर का सब काम करती। सेठ की वसुमती के प्रति बढ़ता हुआ लगाव देखकर वह मूला सेठानी के कान भरते हुए बोली, "सेठानीजी, आप तो बहुत भोली हैं। वसुमती धीरे-धीरे सेठ और घर दोनों पर कब्ज़ा जमा लेगी और एक दिन सेठ आपको घर से निकाल देंगे और आप देखते ही रह जाएँगी। अभी भी देर नहीं हुई

है, कुछ सोचो।"

सेठानी यह बात मानने को तैयार नहीं थी। ऐसे में एक दिन जब सेठ बाहर से आए तब वसुमती लोटे में पानी लेकर उनके चरण धोने गई। झुककर पैर धोते समय उसके खुले बाल पानी में गिर रहे थे। बाल भीग न जाएँ इस हेतु से सेठ ने उसके बाल ऊपर पकड़कर रखे। योगानुयोग मूला सेठानी उसी समय रसोई से बाहर आई और उन्होंने यह दृश्य देखा। उन्हें तुरंत ही नौकरानी की बात याद आई। उनके हृदय में आग लग गई। सेठ उनके हाथ में से हमेशा के लिए निकल जाएँगे ऐसा डर लगने लगा।

अगर इस बात को यहीं से नहीं रोका गया तो इसका परिणाम मेरे लिए वास्तव में खराब आएगा, ऐसा सोचकर मूला सेठानी ने एक योजना बनाई। उन्होंने नौकरानी को छुट्टी दे दी और सारा काम वसुमती पर डाल दिया। पूरा दिन काम करने के बाद भर पेट खाना भी नहीं देती थी। दिनों-दिन वसुमती सूखकर कांटा होती गई। शरीर में कमज़ोरी आती गई। लेकिन कर्म के सिद्धांत को माननेवाली वसुमती खुद के ही कर्मों का दोष देखकर सब समताभाव से सहन करने लगी। मूला सेठानी के प्रति ज़रा भी भाव बिगाड़े बिना वह हमेशा उन्हें उपकारी भाव से ही देखती। जिनेश्वर भगवान को याद करती, किसी भी शिकायत के बिना वह दिन गुज़ारने लगी।

एक समय की राजकुमारी की यह कैसी दशा!!

चलो खेलें

१ नीचे बताई गई आकृति में २०१३ कितनी बार लिखा है?

२ नीचे दिए गए १२ खानों में १ से १२ नंबर ऐसे सेट करो कि आड़ी और खड़ी लाइन (→) (↑) और एक सरीखे रंग के ४-४ खानों की कुल संख्या २६ आए।

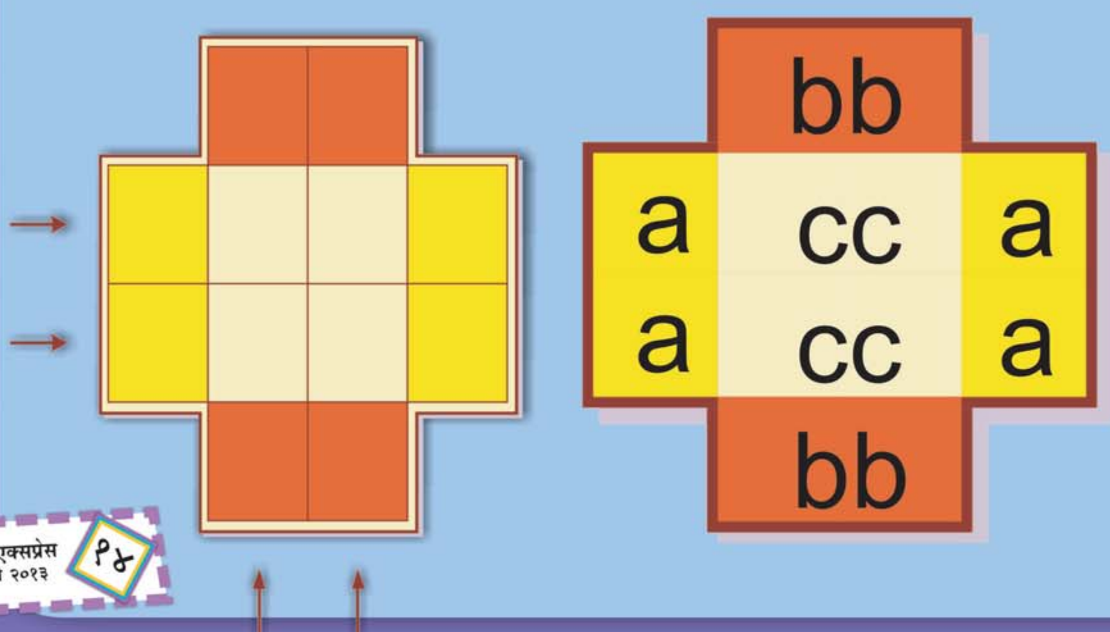

३ रास्ता ढूँढो।

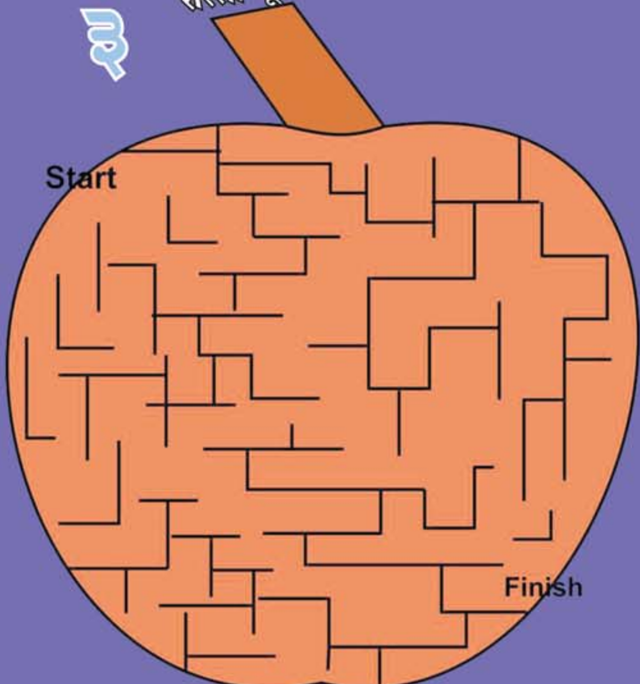

४ नीचे दिए गए चित्र में दो कोर्नर को जुड़ता हुआ, ऐसा कोर्नर ड्रो करो कि चित्र के २ सरीखे भाग बने।

५ नीचे दिए गए चित्र में कितने प्राणी हैं, वे ढूँढ निकालो।

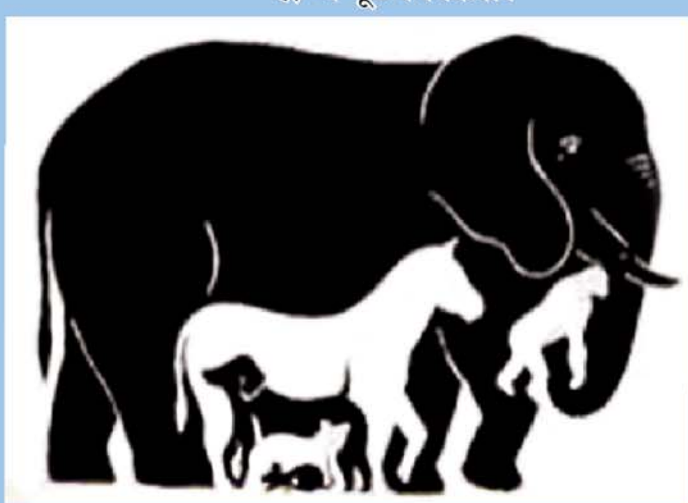

६ यहाँ बताई गई घोड़े की नाड़ को तीन सीधी लाइन से सात विभाग में बाँटो

पूज्यश्री के साथ बच्चे

प्रश्नकर्ता : मुझे पूरा दिन बोरियत होती रहती है। सभी चीज़ों में बोरियत होती है और एक बार बोरियत हुई कि धीरे-धीरे वह इतनी बढ़ जाती है कि फिर काम करने में बोरियत होती है, सभी में बोरियत होने लगती है।

पूज्यश्री : आपको खाना खाने में बोरियत होती है? सोने में बोरियत होती है? काम नहीं करने में बोरियत होती है? अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर घूमने में बोरियत होती है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री : मतलब वृत्तिओं को मज़ा करना है। और सचमुच में उसे मज़ा करना नहीं मिलता इसलिए फिर उसे बोरियत होती है।

प्रश्नकर्ता : तो मैं क्या करूँ?

पूज्यश्री : कुछ क्रीएटिव ढूँढ निकालना, जो अच्छा लगता हो, वैसा। ड्रोइंग करना या फिर मम्मी को घर में मदद करना, ऐसा कुछ। उसमें लग जाना तो बोरियत नहीं होगी। मम्मी को मदद करना अच्छा लगता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्यश्री : तो मदद करना ताकि बोरियत नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

प्रश्नकर्ता : मुझे अंग्रेज़ी आ जाए और बड़ी होकर जगत् कल्याण करूँ, ऐसी शक्ति दीजिए।

दिपकभाई : हाँ, लेकिन जगत् कल्याण का ध्येय रखते हैं, उसे प्योर नहीं होना पड़ेगा? जैसे आम का पेड़ है, उसे पत्थर मारे तो भी आम देता है या फिर चिढ़ता है? आम चिढ़ता है, किसी पर?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दिपकभाई : आम का पेड़ छाँव देता है, आम देता है, वैसा हमें परोपकारी बनना है। किसी को दुःख मत देना। जगत् कल्याण की शुरूआत कहाँ से हैं, कि किसी को दुःख देना बंद करें, किसी का नेगेटिव देखना बंद करें। जगत् कल्याण की भावना करना, अच्छा होगा।

पहेलियों के जवाब

अपने आप को परखकर देखो

	प्रिय कार्य	बोरियतवाला कार्य	बोरियत टालने के उपाय
नताशा	घूमने जाना	सुबह जल्दी उठना	उपाय -३
अभी	टी.वी. देखना	पढ़ना	उपाय -२
त्रिशा	इन्टरनेट सर्फ करना	घर के काम में मदद करना	उपाय -१

अक्रम एक्सप्रेस के पाठकों के लिए.....

बालमित्रों,

हर महीने हम मिलते तो हैं, लेकिन मैं तुम्हें पूछना तो भूल ही जाता हूँ। तो चलो, आज पूछ ही लेता हूँ। मित्रों, आपको अक्रम एक्सप्रेस पढ़ना अच्छा लगता है? अक्रम एक्सप्रेस पढ़ने के बाद तुम्हारे जीवन में कैसा परिवर्तन अनुभव कर रहे हो? वह हमें ज़रूर बताना ताकि हमें सबसे अच्छा अक्रम एक्सप्रेस बनाने में प्रोत्साहन मिले। आपके अनुभव हमें नीचे दिए गए एड्रेस या इमेल आइडी पर ज़रूर से भेजना।

बालविज्ञान विभाग, त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
मु.पो.- अडालज, जि. - गांधीनगर - ३८२४२१,.
e-mail: akramexpress@dadabhagwan.org

समर कैम्प

बच्चों और युवानों के लिए संस्कार सिंचन शिविर - वर्ष २०१३

स्थल	ग्रुप A - युवान भाईओं के लिए उम्र : १३ से १६ वर्ष		संपर्क नंबर
मुंबई	१९,२०,२१ अप्रैल		०९३२१०१०२०८
सीमंधर सिटी	२७,२८ अप्रैल		०७९-३९८३०९३९
सूरत	४,५ मई		०९८९८६८९६९७
राजकोट	१८,१९ मई		०९८२४२१८०५६
	ग्रुप B - लड़कियाँ और लड़को के लिए		
	७ से ९ वर्ष	१० से १२ वर्ष	
मुंबई (घाटकोपर)	२०,२१ अप्रैल	२०,२१ अप्रैल	०९३२०२५५२६६
मुंबई(कांदिवली)	१३,१४ अप्रैल	१३,१४ अप्रैल	०८६५२८९००६६
भावनगर	२२,२३ अप्रैल	२२,२३ अप्रैल	९५७४००८०९०
राजकोट	४,५ मई	६,७ मई	८८६६८८८८३७
बड़ौदा	२५,२६ अप्रैल	२७,२८ अप्रैल	८९८०९९५२५५
भूज	४,५ मई	६,७ मई	९९०९५६५६७९
सूरत	२५,२६ अप्रैल	२५,२६ अप्रैल	९७२५८३२७०४
सीमंधर सिटी	१६,१७ मई	१८,१९ मई	०७९-३९८३०९३९
	ग्रुप C - युवान बहनों के लिए		
	१३ से १६ वर्ष	१७ से २१ वर्ष	
सीमंधर सिटी	१,२ मई	२१,२२,२३ मई	०७९-३९८३०९३९
	ग्रुप D - युवान भाईओं के लिए उम्र - १७ से २१ वर्ष		
सीमंधर सिटी	१३,१४,१५ मई		०७९-३९८३०९३९
भूज त्रिमंदिर	२७,२८ अप्रैल(१३ से २१ वर्ष)		०७५६७५६१५५६

Akram Express

February 2013
Year : 1, Issue : 10
Conti. Issue No.:10

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

विशेष नोट

१. समर कैम्प में हिस्सा लेने के लिए आपके नज़दीक के सेन्टर पर रजिस्ट्रेशन करवाना ज़रूरी है। रजिस्ट्रेशन चार्ज नोन रिफन्डेबल है।

२. ऊपर बताए गए कोई भी सेन्टर पर कैम्प का रजिस्ट्रेशन दी गई तारीख से १० दिन पहले बंद किया जाएगा, उसके बाद होनेवाले रजिस्ट्रेशन के लिए तत्काल चार्ज लिया जाएगा।

३. ऊपर बताए गए सेन्टर में से कोई एक सेन्टर पर ही हिस्सा ले सकोगे।

हा...

भिखारी : कुछ दान दो न बेटा।
वृद्ध : लो ५ रुपये।
भिखारी (खुश होकर) : माँग-माँग बेटा, जो माँगेगा, वह दूँगा।
वृद्ध : बाबाजी मैंने आपको जो ५ रुपये दिए, उसे ही लौटा दो न !

व्याख्याता : मेरा भाषण यदि बहुत लंबा हो गया हो तो उसका कारण है कि मेरी घड़ी घर पर रह गई है और इस सभा-कक्ष में कोई घड़ी नहीं है।
श्रोताओं में से आवाज़ : अरे भाई, लेकिन यह दीवार पर लटकता हुआ कैलन्डर भी नहीं दिखा?

ही...

हा...

चाचाजी एक किताब पढ़ते-पढ़ते रोने लगे।
चाची ने पूछा : क्यों रो रहे हो?
चाचाजी : इस बुक का अंत बहुत करुण है।
चाची : कौन सी बुक है?
चाचाजी : पासबुक।

ही...

रोहित : तुम ऐसा कैसे कह सकते हो कि मनुष्य से ज्यादा घोड़ा समझदार होता है?
अमित : बिल्कुल सीधी बात है। जब मैदान में दस घोड़े दौड़ते हैं, तब उसे देखने हज़ारों मनुष्य इकट्ठा होते हैं, लेकिन मैदान में दस मनुष्य दौड़ें तो एक भी घोड़ा उसे देखने नहीं आता।

टीचर: आप लोग जानते हो कि आफ्रीका के एक विस्तार के बच्चे स्कूल नहीं जाते तो हमें पैसे इकट्ठे करके क्या करना चाहिए?
सभी बच्चे एक साथ : आफ्रीका जाना चाहिए।

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.